RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-18, अंक-3, जून जुलाई अगस्त 2025

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-18 अंक - 3 जून-जुलाई-अगस्त-2025

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

रामचरितमानस की विचार भूमि का तुलनात्मक अध्ययन : विशेषतः छात्रों के सामाजिक उत्थान के संदर्भ में

डॉ. कल्पना महावर

विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)

हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

रामचरितमानस की विचारभूमि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें लोक और शास्त्र दोनों का सूक्ष्म और संतुलित समन्वय है। तुलसीदास की रचना तब प्राणवंत होती है जब उसमें केवल शास्त्रीय ज्ञान या केवल लोककाव्य की मौलिकता न होकर दोनों का समावेश हो। लोक दृष्टि से देखा जाए तो रचना तब तक पूर्ण प्रभावशाली नहीं हो सकती जब तक उसमें वह भाव, वह जीवन्तता और वह सहज संवाद नहीं हो जो आम जनता के हृदय को छू सके। तुलसीदास ने अपने काव्य में इसी सिद्धांत को अपनाया और अपने युग के संदर्भ में परंपरा और शास्त्र के उत्कृष्ट अंशों को मिश्रित किया। उनके काव्य में कल्पना प्रवणता और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का सम्मिलन इसे केवल साहित्यिक या धार्मिक रचना नहीं, बल्कि युगोपयोगी अनुभव बना देता है। यही कारण है कि रामचरितमानस न केवल स्थानीय या कालिक सीमाओं में सीमित रह गया, बल्कि सार्वदेशिक और सार्वकालिक महत्त्व प्राप्त कर सका।

गोस्वामी तुलसीदास त्रिकालदर्शी संत कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके जीवन में काशी का विशेष स्थान है। काशी में रहते हुए उन्होंने न केवल भारतीय पुराणों और शास्त्रों का गहन अध्ययन किया, बल्कि वहां के विद्वान पंडितों से ज्ञान की प्रतिस्पर्धा भी की। इससे उनका शास्त्रीय ज्ञान मजबूत हुआ और वे लोकसहज शैली में उसे प्रस्तुत करने में सक्षम हुए। उनका काव्य केवल शास्त्रों का अनुकरण नहीं है, बल्कि उसमें लोक अनुभव और भावनाओं का भी गहरा समावेश है।

तुलसीदास ने अपने काव्य में चार प्रमुख घाटों का प्रतीकात्मक उल्लेख किया है – भुशुण्डि कृगरुड़, शिव–पार्वती, याज्ञवल्क्य भारद्वाज, और तुलसीदास तथा संतसमाज। इन चार घाटों का प्रतीकात्मक महत्व यह है कि जैसे इन घाटों में स्नान करने से शुद्धि, आनंद और उत्साह प्राप्त होता है, वैसे ही कवि की बुद्धि और हृदय इन अनुभवों से निर्मल और प्रसन्न हो जाते हैं। उनके अनुसार, इन घाटों में स्नान के पश्चात उनके हृदय में प्रेम और आनंद का प्रवाह उमड़ पड़ा और उन्होंने सुंदर कविता का सृजन किया।

उनकी कविता का रूपक सरयू नदी से संबंधित है। **'सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला।'** यह वाक्य यह दर्शाता है कि कवि की सृजित कविता एक नदी की तरह प्रवाहित हुई, जिसमें श्रीराम का निर्मल यश रूपी जल बह रहा है। इस नदी का तात्पर्य है संपूर्ण सुन्दर मंगल का स्रोत। इसके दो किनारे हैं – लोकमत और वेदमत। यह दर्शाता है कि रामचरितमानस में सामान्य जनता के दृष्टिकोण और शास्त्रीय ज्ञान दोनों की सुंदर संतुलित स्थिति है।

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

इस प्रकार, रामचरितमानस न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसकी लोकप्रियता और शास्त्रीय गहराई इसे तुलनात्मक दृष्टि से भी विशेष बनाती है। तुलसीदास ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि लोक अनुभव और शास्त्रीय ज्ञान का समन्वय किया जाए, तो रचना काल, स्थान और समाज की सीमाओं से परे जाकर सार्वदेशिक और सार्वकालिक महत्त्व प्राप्त कर सकती है।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम के चरित्र का अंकन अत्यंत मर्यादित और आदर्श रूप में किया है। राम केवल एक धार्मिक प्रतीक या पौराणिक नायक नहीं हैं, बल्कि वे हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। तुलसीदास ने राम के माध्यम से केवल धार्मिक कथाओं का प्रचार नहीं किया, बल्कि समाज में शास्त्रीय ज्ञान की प्रतिष्ठा भी स्थापित करना चाहा। उनका उद्देश्य था कि इस ज्ञान के माध्यम से समाज का मंगल संभव हो।

रामचरितमानस में उन्होंने विभिन्न पात्रों और घटनाओं का समावेश करके एक व्यवस्थित और मानवोपयोगी कला का निर्माण किया। उन्होंने राम कथा को इधर-उधर बिखरी हुई सामग्री से एकीकृत करके उसे लोकप्रिय और जीवनोपयोगी रूप दिया। इस काव्य में राम न केवल देवता हैं, बल्कि लोक नायक और लोकेश्वर दोनों हैं। उनके अतिरिक्त काव्य में राजा दशरथ, माताएं, भाई, प्रजा, बन्धु-बान्धव, शबरी, निषाद, बंदर, भालू और रीछ जैसे पात्र भी हैं, जिनके चरित्र अत्यंत सूक्ष्म और चरम पराकाष्ठा तक चित्रित किए गए हैं।

तुलसीदास का उद्देश्य केवल कथा कहने का नहीं था; वे समाज को संदेश देना चाहते थे और नई आशा की संजीवनी देना चाहते थे। उन्होंने रामराज्य की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया, जिसे परलोक में स्थापित नहीं किया जा सकता। अत: उन्होंने इसे सिद्धान्त रूप में लोक में प्रस्तुत किया। रामराज्य में आदर्श जीवन के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं - प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने वर्ण और आश्रम के धर्म में नियत रहेगा, वेद और पथ का पालन करेंगे, और राज्य में न भय, न रोग, न दुख रहेगा। उनके अनुसार:

'वरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय, सोक न रोग।।'

शास्त्र दृष्टि से तुलसीदास का दृष्टिकोण यह है कि बिना शब्द और अर्थ के समन्वय के वाणी पूर्ण नहीं होती। जैसे कालिदास ने रघुवंश में लिखा:

'वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वंदे पारवती परमेश्वरौ।'

अर्थात् 'शब्द और अर्थ यदि सदा एक साथ मिलकर न हों, तो वाणी पूर्ण नहीं होती। संसार के माता-पिता उमा और महेश्वर को मैं शब्द और अर्थ के पूर्ण ज्ञान के लिए नमस्कार करता हूँ।'

इसी विचारधारा को तुलसीदास ने अपने काव्य में अपनाया और इसे लोकोपयोगी रूप में प्रस्तुत किया:

'गिरा अरथ जल बीचि सम, कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद, जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।।'

यह दर्शाता है कि तुलसीदास ने शास्त्र और लोक के समन्वय को रामचरितमानस में सिद्धांत और भाव दोनों स्तर पर स्थापित किया। वे चाहते थे कि राम के चरित्र और उनके आदर्श जीवन से समाज प्रेरित हो, और लोक जीवन में आदर्श और मर्यादा का पालन सुनिश्चित हो।

गोस्वामी तुलसीदास ने सम्पूर्ण संसार को 'राममय' माना। उनका दृष्टिकोण था कि भक्तों और आस्तिकों का पुनीत कर्तव्य यह है कि वे इस संसार को परमात्मा की इच्छा का विलास समझें, प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का रूप देखें और उससे प्रेम करें। तुलसीदास के अनुसार प्रेम ही ईश्वर की प्राप्ति और मानव मुक्ति का सर्वोपरि साधन है। उन्होंने अपने काव्य में लोक में कर्म की प्रधानता और ईश्वर की भक्ति का सम्मिलित रूप प्रस्तुत किया। उनका संदेश स्पष्ट है – मनुष्य को अपने कर्मों का फल स्वयं भोगना पड़ता है, अत: उसके कार्य सर्वोत्तम और निष्कलंक होने चाहिए।

अध्यात्म रामायण में इस बात को स्पष्ट रूप से कहा गया है:

'सुखस्य दुखस्य न कोपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहम् करोमीति वृथाभिमानः। स्वकर्म सूत्रे ग्रथितोहि लोकः।।'

इस श्लोक का भावार्थ है कि सुख और दुख का दाता कोई और नहीं है; प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का फल स्वयं भोगता है। अत: मानव को अपने कर्मों में श्रेष्ठता और परिश्रम का पालन करना चाहिए।

साधुमत दृष्टि से, यानी शास्त्र सम्मत दृष्टि से भी गोस्वामी तुलसीदास ने प्रश्न उठाए हैं। वेदों के अनुसार ईश्वर अगम, अगोचर, अज और गोतीत हैं, लेकिन तुलसीदास ने उसी ब्रह्म को लीला करने के लिए अवतार का औचित्य सिद्ध किया। उन्होंने दिखाया कि परम ब्रह्म का मानव रूप में अवतार लेना समाज और भक्तों के कल्याण के लिए आवश्यक था।

'बिप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार।।'
'ब्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस, कौसल्या कें गोद।।'

अर्थात् व्यापक, निरंजन और निर्गुण ब्रह्म ने प्रेम और भक्ति की भावना से माता कौसल्या के गर्भ में अवतार लिया। राम केवल एक साधारण बालक नहीं हैं; वे स्वयं ब्रह्म हैं। माता कौसल्या के रूप में उन्हें जो रूप दिखाया गया, वह लोक और वेद दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रामचरितमानस में यह भी दर्शाया गया है कि राम अपने छोटे भाई भरत के प्रति प्रेम और आनंद से पूर्ण थे। यहां तुलसीदास ने निषाद, जिसे सामान्य लोक और वेद दोनों में नीचा माना जाता है, के माध्यम से राम और भरत के प्रेम और सम्मान का दृश्य प्रस्तुत किया। राम ने निषाद की छाया को अपनाकर और अपने भाई भरत के हृदय में प्रेम और आनंद का संचार करके समाज को संदेश दिया कि सच्चा आदर्श और ईश्वर भक्ति किसी जाति या वर्ग की सीमाओं में बंधी नहीं है।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में दिखाया कि राम न केवल एक आदर्श नायक हैं, बल्कि उनके जीवन और चरित्र के माध्यम से लोक और शास्त्र दोनों की प्रतिष्ठा संभव है। उन्होंने अपने काव्य में यह स्पष्ट किया कि राम का नाम, उनका चरित्र और उनके आदर्श सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से समाज को लाभ पहुंचाते हैं।

उदाहरण स्वरूप, तुलसीदास लिखते हैं:

'यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु बेदु बुध संगत दोऊ।।
तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ बेदु बड़ाई।।'

अर्थात् लोक और वेद दोनों के विद्वानों के लिए राम का नाम और यश सर्वमान्य है। राम का नाम और उनकी प्रशंसा करना समाज और शास्त्र दोनों में प्रतिष्ठा का कारण बनती है। इसी प्रकार:

'मिटिहहिं पाप प्रपंच सब, अखिल अमंगल भार।
लोक सुजसु परलोक सुखु, सुमिरत नामु तुम्हार।।'

अर्थात् तुलसीदास बताते हैं कि राम के नाम का स्मरण करने से समस्त पाप, अज्ञान और अमंगल नष्ट हो जाते हैं, और लोक तथा परलोक में सुख की प्राप्ति होती है।

भरत के संदर्भ में तुलसीदास ने राम के निर्देशों के माध्यम से यह संदेश दिया कि धर्म और लोक-शास्त्र की समझ रखने वाला व्यक्ति अपने कर्मों में श्रेष्ठ हो सकता है। राम भरत से कहते हैं:

'तात भरत तुम्ह धरम धुरीना। लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना।।'

इसका अर्थ है कि भरत धर्म की धुरी है, जो लोक और वेद दोनों में पारंगत है और प्रेम में प्रवीण है। राम और भरत का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत पुरुषार्थ, सुयश और धर्म है, बल्कि राजा और प्रजा की भलाई के माध्यम से समाज का मंगल सुनिश्चित करना भी है।

'मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वास्थु सुजसु धरमु परमारथु।।
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई। लोक बेद भल भूप भलाई।।'

यह श्लोक यह बताता है कि राम और भरत दोनों का सर्वोपरि पुरुषार्थ और धर्म पिता की आज्ञा का पालन करना और राज्य की भलाई सुनिश्चित करना है। इसका समाज और शास्त्र दोनों में विशेष महत्व है।

तुलसीदास ने राम नाम की महिमा को कलियुग के संदर्भ में भी स्पष्ट किया है। राम नाम न केवल मनोवांछित फल देने वाला है, बल्कि परलोक का परम हितैषी और इस लोक का पालनहार भी है। जैसे:

'राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ।।
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे।।'

इस श्लोक में तुलसीदास ने दिखाया कि राम ने सुग्रीव और विभीषण को अपनी शरण में रखा, और नाम ने गरीबों पर विशेष कृपा की। यह लोक और शास्त्र दोनों में राम के नाम की महिमा और उसकी सार्वकालिक उपयोगिता को दर्शाता है।

भक्ति आंदोलन के अंतिम चरण में उत्तर भारत के समाज पर गोस्वामी तुलसीदास का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उस समय समाज विघटन और निराशा के दौर से गुजर रहा था। ऐसे समय में तुलसीदास ने समाज निर्माण का प्रश्न उठाया और शास्त्र निर्देशित मान्यताओं को लोक भूमि पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने राम के रूप में ऐसा आदर्श नायक प्रस्तुत किया, जो एक ओर नर है और दूसरी ओर नारायण भी है। उनके राम में मानव और दिव्य का ऐसा अद्भुत समन्वय है, जिसमें कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती। यही कारण है कि राम आज भी हमें प्रेरित करते हैं। वे आदर्श हैं, हमारे विश्वास और आशा के केंद्र हैं। उनकी छत्र छाया में रहकर व्यक्ति अधिक सहिष्णु, आदर्शवान, निष्कपट, प्रेमी, न्यायप्रिय और मानवतावादी बन सकता है।

तुलसीदास और उनकी अमर कृति रामचरितमानस का महत्व हिन्दी साहित्य में हिमालय और सुरसरिता के समान है। जैसे हिमालय स्थिर और अचल है, और सुरसरिता कभी नहीं सूखती, वैसे ही तुलसी

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं और रामचरितमानस सर्वश्रेष्ठ कृति। इसके आदर्श, चरित्र और शिक्षाएँ सदियों से हमारे मार्गदर्शन का स्रोत रही हैं और भविष्य में भी यही भूमिका निभाएँगी।

डॉ. प्रेम शंकर का मत है कि तुलसीदास हमेशा सचेत रहे कि उनके द्वारा प्रतिपादित सत्य, धर्म, मर्यादा, नीति, विवेक और आचरण अपरिभाषित न रह जाए। इसके लिए उन्होंने कोरे वक्तव्यों की बजाय चरित्रों में आदर्शों को प्रमाणित किया और उन्हें मूल्यों से जोड़ा। तुलसी जिस मानव धर्म का प्रचार करना चाहते थे, वह पूर्ण यथार्थ पर आधारित न होकर उनके गहरे आदर्शवादी चिंतन से जुड़ा हुआ है। उन्होंने सत्य को धर्म का आधार माना और उसके पालन के लिए दशरथ जैसे पात्र प्राण त्यागने तक के लिए तैयार रहते हैं। इसके उदाहरण के रूप में कैकेयी से रामराज्य और धर्म के विषय में कहा गया श्लोक है:

'नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिंकि कोटिक गुंजा।।
सत्य मूल सब सुकृत सुहाए। वेद पुरान विदित मुनि गाए।।'

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि रामचरितमानस एक अभूतपूर्व ग्रन्थ है जिसमें तुलसीदास ने वेद, उपनिषद, गीता और अन्य आध्यात्मिक ग्रंथों के सार को सरल और सहज भाव में प्रस्तुत किया। यह ऐसा है कि जैसे गौ माता का दूध पीने वाले को यह पता नहीं चलता कि घास के किस तृण से दूध का कौन सा अंश उत्पन्न हुआ, वैसे ही तुलसीदास ने विभिन्न सिद्धांतों को सहज भाव में व्यक्त किया, और यह पता लगाना कठिन है कि उन्होंने किस स्रोत से कौन-सा विचार लिया।

तुलसीदास का साहित्यिक, सामाजिक और धार्मिक महत्व अत्यंत व्यापक और असाधारण है। अनेक विद्वानों ने उनके योगदान को अपने-अपने दृष्टिकोण से तुलनात्मक रूप में व्यक्त किया है। नाभादास ने तुलसीदास को कलिकाल का वाल्मीकि कहा, स्मिथ ने उन्हें मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति माना, और ग्रियर्सन ने उन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा। विद्वानों ने तुलसीदास की रामायण को उत्तर भारत की बाइबिल के रूप में मान्यता दी। इन सभी समीक्षाओं का मूल तात्पर्य यही है कि तुलसीदास न केवल एक कवि थे, बल्कि असाधारण शक्तिशाली, लोकनायक और महात्मा भी थे।

उनकी एक अन्य पुस्तक में यह उल्लेख मिलता है कि तुलसीदास कवि, भक्त, पंडित सुधारक, लोकनायक और भविष्य के स्रष्टा थे। इन सभी रूपों में उनका कोई भी रूप किसी से घटकर नहीं था। यही कारण था कि उन्होंने समाज में समता और संतुलन बनाए रखते हुए एक अद्वितीय काव्य की रचना की, जो उत्तर भारत का मार्गदर्शक बनकर सदियों से प्रतिष्ठित है और भविष्य में भी रहेगा। तुलसीदास ने केवल साहित्य रचना का कार्य नहीं किया, बल्कि अपने काव्य के माध्यम से समाज, धर्म, भक्ति और नैतिकता के आदर्श भी प्रस्तुत किए।

प्रखर आलोचक और हिन्दी साहित्य के प्रथम प्रामाणिक इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि तुलसीदास अपनी दृष्टि के विस्तार के कारण उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मंदिर में पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ विराजमान हैं। यदि भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि चुनना हो, तो तुलसीदास इस पद के सर्वश्रेष्ठ और योग्य प्रत्याशी हैं।

तुलसीदास का 'रामचरितमानस' शताब्दियों से उत्तरी भारत का मार्गदर्शक रहा है। डॉ. भगवती प्रसाद सिंह के अनुसार, तुलसीदास ने लोक जीवन की सूक्ष्म प्रवृत्तियों और सामाजिक अन्तरधाराओं का गहन अध्ययन किया। उन्होंने लोक और आध्यात्मिक जीवन के अतिवाद से बचकर एक 'मध्यम मार्गी आचार पद्धति' प्रस्तुत की। इस दृष्टि से तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से आदर्श और यथार्थ का

सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया।

रामचरितमानस में, तुलसीदास ने केवल दिव्य 'साकेत' या पौराणिक आदर्शों को प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्हें 'रामपुर' या यथार्थ जीवन के संदर्भ में स्थापित किया। इसका उद्देश्य यह था कि राम के चरित्र और आदर्श केवल परलोक या पौराणिक कथाओं तक सीमित न रहें, बल्कि लोक जीवन में व्यवहारिक और अनुकरणीय रूप से प्रकट हों।

जैसे तुलसीदास स्वयं कहते हैं:

'घर कीन्हें घर जाति है, घर छाँड़े घर जाइ।
तुलसी घर बन बीच रहु, राम प्रेमपुर छाइ।।'

अर्थात् तुलसी ने अपनी रचना के माध्यम से लोक के बीच अपने घर को स्थापित किया और उसे 'राम प्रेमपुर' के रूप में सजाया। यहाँ तुलसीदास का उद्देश्य स्पष्ट है – उन्होंने अपने काव्य को लोक जीवन और जनता की वास्तविकताओं के मध्य स्थापित किया, ताकि आदर्श और भक्ति का मार्ग सभी के लिए सुलभ और प्रासंगिक हो।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि रामचरितमानस में तुलसीदास ने लोक और शास्त्र का संतुलित समन्वय किया। राम को मानव और दिव्य रूप में प्रस्तुत कर उन्होंने धर्म, भक्ति, कर्म और आदर्श जीवन की प्रेरणा दी। रामराज्य के आदर्श के माध्यम से समाज और राज्य का सर्वोत्तम पुरुषार्थ स्पष्ट हुआ। राम का नाम और चरित्र पाप, अज्ञान और अमंगल से मुक्ति दिलाते हैं। तुलसीदास न केवल महान कवि और लोकनायक हैं, बल्कि उनके काव्य ने उत्तर भारत में शताब्दियों तक मार्गदर्शन प्रदान किया।

ꕥꕥꕥ

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रामचरितमानस, तुलसीदास, उत्तरकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, 2014*
2. *रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, 2014*
3. *रामचरितमानस, तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, 2014*
4. *रामचन्द्र प्रसाद शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, खण्ड 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1959*
5. *डॉ. प्रेम शंकर, तुलसीदास और उनका समाज, शिक्षा भारती, भारत, 1998*
6. *डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, खण्ड 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995*
7. *डॉ. भगवती प्रसाद सिंह, रामचरितमानस: लोक और आध्यात्मिक दृष्टि, हिंदी अकादमी, भारत, 2002*
8. *नाभादास, काव्यसिंधु, संस्कृत विश्वविद्यालय, भारत, 1975*
9. *स्मिथ, हिस्ट्री ऑफ इंण्डिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, यूके, 1962*
10. *ग्रियर्सन, दी हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, एलन एंड अनविन, लंदन, यूके, 1918*
11. *रमभद्राचार्य (संपादक), रामचरितमानस का श्रीतुलसीपीठ संस्करण, श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट, मध्य प्रदेश, 2005*